ISSN : 2583-2948

ध्रुवनाथ सिंह
पीजीटी (चित्रकला)
राजकीय रबीन्द्र बांग्ला विद्यालय
पोर्ट ब्लेयर, अंडमान निकोबार
मो - 9476046365

बंगाल कला शैली में कलाकारों के संयोजन शक्ति एवं स्वतंत्रता आन्दोलन में सहभागिता

सारांश-

कला की भाषा में संयोजन का अभिप्राय चित्र के तत्वों को वातावरण के अनुसार सतह (चित्र पट) पर सुंदर ढंग से सुसज्जित व व्यवस्थित की करने की एक प्रक्रिया होती है। जिसका प्रभाव चित्र निर्माण के साथ-साथ विषय वस्तु को प्रगाढ़ता देने में होता है। उत्तम संयोजन में चित्राकृति की यथार्थता व वस्तुनिर्पेक्षता दोनों का प्रभाव सौ गुना से भी ज्यादा अक्ष पटल पर पड़ता है जिससे देखने वाले दर्शक, कला समीक्षक एवं आम जनमास पर एक अमिट गहरी छाप का असर हो जाता है। यदि यह संयोजन शक्ति जिस कलाकर के चित्रों में प्रगाढ़ होती है वह चित्रकार के चित्र के प्रभाव की सफलता को उच्चस्तर की कर देती है। संयोजन कई कलात्मक तत्वों का एक अनुपातिक समिश्रण होता है जिसमें गणितीय माप-तौल, भाव-भंगिमा, कल्पना, वर्ण, ब्रशाघात, संतुलन होता है। कल्पना मानव सृजनशीलता का सबसे उत्कृष्ठ कार्य होता है। इसलिए इसका वर्णन विभिन्न पुराणों में आदिकाल से देखने को मिलता है। उदाहरण के तौर पर विष्णुधर्मोत्तर पुराण के अध्याय संख्या-(3-43-38) मं कल्पना को मानव स्वभाव का अभिन्न अंग माना गया है। जिसको नीचे लिखे इस वाक्य से समझा जा सकता है।

कलानां प्रवरं चित्रं धर्मकामार्थ मोक्षदम।

मांड़गल्य प्रथमं चैत्यदगृहे का प्रतिष्ठितम्।।

बंगाल शैली के कलाकारों में कल्पना के साथ उत्कृष्ठ संयोजन शक्ति का प्रवाह पूर्णतया सुसज्जित देखने को मिलता है। जिसके दम पर कई कलाकार समूहों ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में अपने काल्पनिक व यथार्थतापूर्ण चित्रों के संयोजन से भारतीयों के अंदर भारतीयता की आग जलाई। चित्रों के भावपूर्ण संयोजन ने स्वतंत्रता आन्दोलन में आग में घी डालने का कार्य किया था।

इस प्रकार के विषयक चित्रित हजारों चित्रों, इस्तेहारों ने बिना हथियार उठाये अपनी आक्रोशित, तीव्र ज्वलन्त भावनायें आम जनता के समक्ष अपने देशीपन की छाप एवं धारदार हथियार के रूप में प्रस्तुत की।

अतः संयोजन शक्ति को बंगाल पुनर्जागरण के कलाकारों का ब्रम्हास्त्र कहना अतिशयोक्ति नही होगा। किसी भी कलाकार की संयोजनशक्ति कलाकार में निहित ऊर्जा व क्षमता का प्रतीक होती है, जो कि कलाकार की भौतिक एवं अध्यात्मिक जीवन के कलात्मक रास्ते को तय करती है।

परिचय

पश्चिम बंगाल प्राचीन समय से ही कला एवं संस्कृति में समृद्ध भारत के मध्यपूर्व का एक राज्य है। यह राज्य इतिहास काल से ही विदेशी अक्रान्ताओं एवं व्यापारिक वाणिज्यिक सौदागरों का पसंदीदा केन्द्र रहा है। जहां पर विभिन्न विदेशी शासकों ने अपना प्रभुत्व स्थापित किया एवं साथ ही साथ धन-धान्य संस्कृति को काफी क्षति भी पहुँचाई। इन्हीं विदेशी व्यापारियों में से एक थे ब्रिटिश पूरे भारत में लगभग 200 वर्षों तक शासन किये और अपनी मनमानी शासन के दौरान कला एवं संस्कृति को नष्ट किया तथा साथ ही अपनी कला-शिक्षा, संस्कृति को सर्वोपरि रखकर जबरदस्ती भारतीयों के ऊपर थोपने का भी भरपूर कार्य किया। इस विदेशी पारम्परिक औपनिवेशिक शिक्षा से आजीज आकर बंगाल के कुछ प्रबुद्ध कलाकारें ने एक संगठन तैयार की जिसमें कुछ विदेशी कलाकारों, साहित्यकारों ने भी भारतीय संस्कृति कला के उत्थान में महत्वपूर्णा कार्य किया। इन विदेशी कलाकारों, इतिहासकारों, साहित्यकारों, समाजसुधारकों में एक प्रसिद्ध नाम इ0वी0 हैवल (ब्रिटिश कला समीक्षक, इतिहास) का है। जिन्होंने भारतीय कला के उत्थान में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इस संगठन का शुरूआत पश्चिम बंगाल के शहर कलकत्ता में हुआ। इस संगठन का मुख्य कार्य मृत पड़ी भारतीय कला-संस्कृति को पुर्नजागृत एवं स्थापित करना था। इस संगठन में मुख्य रूप से अग्रणीय भूमिका निभाने वाले कलाकारों में क्रमशः अबनीन्द्र नाथ टैगोर (1871-1951 ई0) जोडासांकों (पश्चिम बंगाल), नन्दलाल बोस (अबनीन्द्र नाथ टैगोर के सबसे प्रतिभाशाली शिष्य), विनोद बिहारी मुखर्जी, जामिनी राय, क्षितिन्द्र नाथ मजुमदार, आसीत कुमार हाल्दार, गगनेन्द्र नाथ टैगोर (अबनीन्द्र नाथ के भाई), रामकिंकर बैज आदि थे। इन सबमें सबसे बृद्ध रवीन्द्रनाथ टैगोर थे जिन्होनें 60 वर्ष की आयु में कला-सृजन की शुरूआत की। इन सभी चित्रकारों, मूर्तिकारों को प्रेरणा ब्रिटिश कला समीक्षक, प्रशासक इ0वी0 हैवल व सिस्टर निवेदिता से मिली। जिन्होंने भारतीय कला समाज के उत्थान के लिए कलाकारों को स्वदेशी अपनाने की सलाह दी और कहा यदि आप स्वदेशी को नही अपनायेंगे तो भविष्य में आपका कोई अस्तित्व नही बचेगा, ना ही आपकी कला, ना ही आपकी संस्कृति। इन सभी कलाकारों एवं अन्य महानुभावों के अथक प्रयास से एक नयी भारतीय कला शैली का जन्म हुआ जो कि योरोपीय जलरंग एवं जापानी, चाइनीज जलरंग तकनीक व भारतीय रेखांकन शैली (शास्त्रीय शैली अजन्ता) के समिश्रण से मिलकर बनी थी। इन सबके बावजूद योरोपीय यथार्थता शैली का अन्धानुकरण किया जाना चालू था।

'सन 1922 ई0 बंगाल कला शैली के लिए एक प्रेरणा देने वाली घटना घटी। 1922 ई0 में बंगाल पुनर्जागरण के कलाकारों की एक भव्य प्रदर्शनी लगी जिसमें जर्मनी (बाव हाउस) के दो प्रसिद्ध कलाकार आमंत्रित किये गये वो थे, पालक्ली व कान्डिंस्की। दोनों कलाकारों ने इस प्रदर्शनी में प्रतिभाग किया और प्रदर्शनी में लगी योरोपीय यथार्थवादी शैली पर आधारित चित्रों का बहिष्कार करने का निर्देश दिया। तथा साथ ही योरोपीय नियमों से मुक्त होने व अपने चित्रों में प्राकृतिक आकारों जैसे कि घन, शंकु, गोला, आदि के प्रयोग पर बल देने का सुझाव दिया। इस सुझाव के परिणाम स्वरूप पाश्चात्य शैली का अंधानुकरण पर प्रतिबन्ध लगना शुरू हो गया तथा साथ ही नयी शैली के साथ स्वदेशी विषयों के चित्र बहुतायत संख्या में बनने शुरू हो गये।'नई शैली का नामकरण 'वाश' किया गया जो बंगाल पुनर्जागरण की पहचान बनी।

बंगाल कला आन्दोलन भारत का सबसे बड़ा कला आन्दोलन था जिसने सर्वप्रथम मृत पड़ी भारतीय कला को पुनर्जन्म देने का कार्य किया तथा साथ ही समाज, देश व अन्तर्राष्ट्रीय/वैश्विक स्तर पर पहचान दिलायी।

'कला के क्षेत्र में योरोपीय वादों तथा चित्रांकन पद्धति का भारत में जो अन्धानुकरण किया जा रहा था, बंगाल पुनर्जागरण काल की कला में उसका पूर्णतया परित्याग किया गया और चित्रकला के क्षेत्र में भारतीय परम्परा, संस्कृति, धर्म, इतिहास नई स्वदेशी शैली आदि का प्रवेश हुआ।'

इस शैली का विकास 'वाश'जल रंग शैली के रूप मे हुआ जो इस आन्दोलन की पहचान बनी। यह शैली जापानी भारतीय, योरोपीयों जलरंग के मिश्रण से बनी थी। इस शैली के विकास में अबनीन्द्र नाथ ठाकुर एवं अन्य सहयोगी कलाकारों का मौलिक प्रयास का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

'डा0 आनन्द कुमार स्वामी (कला, इतिहासकार, तत्व विज्ञान वेत्ता-श्रीलंका) ने अबनीन्द्रनाथ ठाकुर एवं उनके शिष्यों के तात्कालिक कला प्रयोगों की सराहना करते हुए यह स्वीकारा है कि इन कलाकारों ने भारतीय कलात्मकता को पुनर्जीवित किया है और देश के स्वतन्त्रता आन्दोलन व स्वदेशी का आहवान ने इस नई कला को फलने-फूलने में मदद की।'

संयोजन

'भारत माता की जय' यह नारा पहली बार बंकिम चर्ट्जी के सुप्रसिद्ध उपन्यास 'आनन्दमठ के दूसरे संस्करण में सुनाई दिया। तब तक भारत माता का कोई भौतिक चित्र जैसा आजकल हम देखते हैं उपलब्ध नही था। भारत माता का पहला भौतिक स्वरूप का निर्माण सन 1905 ई0 में वंग-भंग आन्दोलन के दौरान अबनीन्द्रनाथ ठाकुर ने बनाया था।

संयोजन-1 भारत माता (1905 ई0)

यह चित्र बंगाल पुनर्जागरण के महान कलाकार अबनीन्द्र नाथ ठाकुर द्वारा चित्रित है। यह एक विशिष्ठ चित्र है। जिसमें भारतीय समृद्धि सभ्यता की झलक दिखाई देती है। माँ का स्वरूप वैसा ही है जैसा भारतीय समाज में देवियों के स्वरूप की कल्पना की गयी है। एक हाथ में पोथी जो कि शिक्षा-संस्कृति का प्रतीक है। दूसरे हाथ में माला संस्कृति एवं परम्परा का द्योतक है, और तीसरे हाथ में धान की बाली धन-धान्य एवं कृषि का प्रतीक, चौथे हाथ में स्वनिर्माण का प्रतीक कपास है।'भारतवर्ष के स्वर्णिम इतिहास में देखा जाय तो भारतीयता के चार स्तम्भ क्रमशः शिक्षा, संस्कृति, कृषि एवं निर्माण ही मुख्य है। ये चारों स्तम्भ किसी भी देश की आधार भूति नीव होते हैं। यदि इस पर आघात किया जाय तो उस देश की रीढ़ की हड्डी टूट जायेगी'

सभी भारतीयों को उनके दिलों दिमाग में इस चारों स्तम्भों की महानता एवं महत्ता को बताने एवं इसके प्रति जागरूक करने हेतु सन् 1905 ई0 में बंगाल के इस महान कलाकार ने सुव्यवस्थित एवं सुसंगठित सुंदर संयोजन को 'वाश'तकनीक में सृजित किया जो भारतीय समाज को जगाने एवं आत्मनिर्भर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा किया। वाकयी में इस संयोजन को देखने के बाद देशभक्ति का जज्बा स्वंय ही उबलने लगता है। यह एक कलाकार के संयोजन की ही शक्ति है जो लाखों-करोड़ों भारतीयों को हृदय परिवर्तन करने पर बाध्य कर देती है।

संयोजन-2 यात्रा का अन्त

अबनीन्द्रनाथ ठाकुर द्वारा चित्रित बहुत ही मार्मिक भावों वाला यह चित्र 'यात्रा का अन्त' शीर्षक से सृजित है। अबनीन्द्रनाथ ठाकुर की संयोजन शक्ति सर्वोत्कृष्ठ प्रकार की है। जिसको देखने के बाद दर्शक चित्र की भावना को अपने आप में समाहित करने पर मजबूर हो जाता है। चित्र यथार्थ रूप में चित्रित है लेकिन यथार्थता के पीछे छिपा भाव का संदेश दिल को झकझोर देने वाला है। पीला, लाल, भूरा, रंग से सना धरती एवं आकाश दिन के ढलने (खत्म) होने का प्रतीक है। ऐसा लग रहा है मानो सूरज तो छिप गया है लेकिन उसकी लालिमा गोधूली में मिलकर एक उदासीन मटमैले रंग का प्रभाव छोड़ रही हो उसी

वातावरण में एक ऊँट हल्के भूरे रंग से निर्मित है जो जमींन पर गिरा हुआ है। शरीर मालिक के भारी बोझ तले दब सा गया है लेकिन फिर भी ऊँट उठने की कोशिश में लगा है। जानवर के चेहरे की पीड़ा बता रही है कि अब उसके प्राण पखेरू होने वाले हैं। प्रथमतया हम कह सकते है कि एक ओर दिन ढलने वाला है दूसरी ओर जानवर की जीवन लीला समापन की ओर है। चित्र का भावार्थ कुछ और ही दर्शा रहा है। जैसा कि चित्र निर्माण के समय भारतीयों की जिंदगी भी चित्र में गिरे ऊँट की तरह हो गयी थी। ब्रिटिश काल में भारतीयों की जिंदगी चित्रित जानवर से भी बदत्तर थी। प्राण निकलते समय भी अंग्रेज काम का बोझ कम नही करते थे। यातना और काम के बोझ तले जीवन ऐसे ही दम तोड़ देता था।

'अबनीन्द्र नाथ बाबू के चित्र संयोजन वाकई अद्भुत थे। पहली बार ये चित्र'प्रवासी' पत्रिका में सन 1937 ई0, महानकला सृजन (बंगाल) की पहचान शीर्षक से प्रकाशित हुआ था।'

अबनीन्द्र नाथ के अलावा और कई ऐसे कलाकार थे जिन्होंने अपनी कला से सम्पूर्ण भारतीय जन मानस का हृदय परिवर्तन कर उनके अन्दर अपनी विरासत, धरोहर, संस्कृति, कला के साथ देशभक्ति के प्रति सजगता एवं संरक्षणता की भावना को जागृत किया। हम सभी को आज पता है कि अंग्रेज उस समय क्या कर रहे थे। कुछ अपने ही लोग धन, सम्पदा, झूठी प्रतिष्ठा के लालच में उनका भरपूर साथ दे रहे थे। इस हालात में संगठन बनाना और सरकार के विरूद्ध खड़ा होना बहुत बड़ी बात थी। अंग्रेजों का मूल मंत्र ये था कि किसी भी देश या राज्य पर सम्पूर्ण प्रभुत्व स्थापित करना है तो सर्वप्रथम उस देश राज्य की संस्कृति सभ्यता को दबा दो, आम जनमानस खुद बे खुद गुलाम हो जायेगी, हुआ भी ऐसा ही। लेकिन ये स्थिति बंगाल के प्रबुद्धों को समझ में आ चुकी थी, फिर क्या उन्होंने संगठन तैयार की और देशहित में कला के माध्यम से आन्दोलन का बिगुल फूंक दिया।

इस कड़ी में एक और बहुमुखी प्रतिभा के धनी कलाकार थे जिनका नाम था 'नन्दलाल बोस'जो अबनीन्द्र ठाकुर के सबसे प्रिय शिष्यों में से एक थे। जिनको गुरू रवीन्द्रनाथ टैगोर प्यार से 'बाबू मोशाय' कहते थे। नन्दलाल बोस चित्रकला, प्रिंट कला (लिनोकट, बुडकट) टेम्परा, वास, जलरंग, तैलरंग सबमें माहिर थे। नन्दलाल बोस 'लेडिज हरिघंम' की अध्यक्षता में अपने और साथियो के साथ महान भारतीय शास्त्रीय कला अजन्ता के चित्रों की प्रतिकृति बनायी। इसके अलावा अन्य बहुतायत चित्रों का निर्माण भी किया जो भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन में भारतीयों को एक होने व स्वदेशी अपनाने, में महत्वपूर्णा भूमिका अदा किया। इस प्रकार के चित्रों में से कुछ चित्रों की ही हम चर्चा करेंगे, जो निम्नलिखित है।

संयोजन-3 मिट्टी के जोतकार (भारतीय कृषक), 1938 ई0

चित्रकार - नन्दलाल बोस

माध्यम - टेम्परा

संग्रह - राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय नई दिल्ली।

यह चित्र कांग्रेस के हरिपुरा अधिवेशन (1938 ई0) के दौरान पांडाल सजाने हेतु महात्मा गांधी के आग्रह पर अबनीन्द्र बाबू के प्रिय शिष्य चित्रकार नन्दलाल बोस द्वारा चित्रित किया गया था। इस पाण्डाल में इस तरह के बहुत से चित्र विभिन्न भारतीय विषयों को लेकर पोस्टर के रूप में बनाये गये थे। सभी चित्रों का निर्माण नन्दलाल बोस ने ही अपने शिष्यों के साथ मिलकर बनाया था। जिनमें किसान के साथ अकड़ता बैल इस चित्र में एक भारतीय परिवेश में पगडी बांधे किसान हृष्ठ-पुष्ठ बैल की दोनों सिंगों को पकड़ कर काबू करते बनाया गया है। जिसका भावार्थ सीधे तौर पर ब्रिटिश सरकार को नियंत्रण करते हुए दिखाया गया है। इसके अलावा कृष्ण अर्जुन को रथ पर दुरतगति के साथ युद्ध की ओर जाते हुए दिखाया गया है। अन्य चित्रों में बड़ा ढोलक बजाते हुए 'ढोलक बाज, सूत काटती महिला, संगीतकार, श्रृंगार करवाती महिला, योद्धा, चरवाहा, राधाकृष्ण, शिकारी कुत्ते के साथ योद्धा,

आदि बहुतायत संख्या में प्रभावशली चित्रों, पोस्टरों द्वारा पाण्डाल को सजाया गया था। जो सीधे तौर पर जनमानस को भाव विभोर व जागृत कर रहा था।

यद्यपि इस कला आन्दोलन में कलाकारों की संख्या बहुत है जिनके प्रत्येक संयोजन का वर्णन करना बहुत ही कठिन कार्य है। इनमें से कुछ और कलाकारों की बात की जाय तो उनमें गगनेन्द्रनाथ ठाकुर, जो कि अबनीन्द्रनाथ ठाकुर के भाई है का नाम महत्वपूर्ण है। जिन्होंने सर्वप्रथम आधुनिक शैली में बहुत सारे चित्रों का निर्माण किया। गगनेन्द्र बाबू प्रारम्भ से यूरोपीय यथार्थवादी शैली का बहिष्कार करने वाले कलाकार थे। ये चित्र निर्माण के साथ-साथ हास्य व्यंग चित्रण में भी माहिर थे। जिन्होंने भारतीय समाज में व्याप्त कुरूतियों को बखूबी अपने हास्य-व्यंग चित्रण के माध्यम से प्रस्तुत किये। विभिन्न विद्वानें का मत है कि गगनेन्द्रनाथ ने सर्वप्रथम आधुनिक शैली में घनवादी चित्रकला की शुरूआत भारत में की थी। अन्य कलाकारें में, क्षितीन्द्रनाथ मजुमदार, विनोद बिहार मुखर्जी, अब्दुल रहमान चुगतई, आसीत कुमार हल्दार, शैलेन्द्रनाथ डे आदि नाम विस्मरणीय हैं। जिन्होंने भारतीय शैली में भारतीय विषयों के अद्भुत संयोजन के साथ बंगाल पुनर्जागरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

निष्कर्ष-

विभिन्न कलाकारों की विभिन्न कलाकृतियों के संयोजन के प्रभावशाली प्रदर्शन के आधार पर विवेचित करना व मूल्यांकन के पक्ष-विपक्ष को साथ रखकर विचार प्रस्तुत करने का उद्देश्य यह है कि बंगाल में कला के पुनर्जागरण में सहयोग करने वाले सभी कलाकारों का संयोजन पक्ष बहुत ही सशक्त रहा है। जिसकी हम कल्पना नही कर सकते। भारतीय कला का सबसे प्रारम्भिक व बड़ा आन्दोलन बंगाल कला आन्दोलन ही है। इस आन्दोलन के दौरान बहुतायत संख्या में ऐसे भी चित्र निर्मित किये गये जिनका स्वतंत्रता आन्दोलन से कोई लेना देना नही था। ये विषय परम्परा पर आधारित थे। जो कलाकार की अपनी अर्न्तआत्मा की आवाज थे न कि देश की। ऐसे चित्रों के भाव पक्ष चित्रकार के हिसाब से तो ठीक हैं किन्तु मेरी निजी राय में बे-अर्थ एवं कमजोर हैं। उदाहरण स्वरूप रवीन्द्रनाथ टैगोर द्वारा चित्रि चित्रों में रेखांकन की दुर्बलता एवं प्रमाण की कमी को आसानी से महसूस किया जा सकता है। चित्र दुर्बलता के अलावा गुरू रवीन्द्रनाथ के साहित्यिक पक्ष को देखा जाय तो ये पक्ष बहुत ही मजबूत है। इस कडी में कुछ चित्र गगनेन्द्र जी के भी है जिनका विषय भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन व भारतीयता से हट कर पाश्चात्य शैली 'घनवाद' से मिलती है। कुछ ऐसे उदाहरणो को दर-किनार कर दिया जाय तो हम दावे के साथ कह सकते है कि बंगाल शैली के कलाकारों की संयोजन शक्ति वाकयी काबिले तारीफ है।

संदर्भ-

* भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास (डा0 रीता प्रताप), 316, 318
* विष्णुधर्मोत्तर पुराण (3-43-38)
* भारतीय कला का इतिहास–II पृष्ठ सं०–९० NCERT
* गूगल स्कालर
* भारतीय कला का इतिहास पृष्ठ सं०–७२ देवेन्द्र कुमारी
* गूगल विकीपीडिया
* भारतीय कला का इतिहास (Full Mark Publication)